30 / 06 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर

पुरूषार्थ की गति में तीव्रता का अनुभव

➢➢ सूक्ष्म वतन की सैर

➳ _ ➳ अमृतवेले के समय चारों ओर अपने बच्चों पर प्यारे बापदादा अमृत की बरसात कर रहे हैं...

→ मैं आत्मा इस व्यक्त देह और व्यक्त दुनिया को छोड़कर सूक्ष्म वतन की सैर करने पहुँच जाती हूँ...

→ सफ़ेद चमकीले बादलों की दुनिया बहुत ही रूहानी लग रही है...

→ सारा वतन दिव्यता के सुगंध से महक रहा है...

→ सूक्ष्म वतन में मैं आत्मा देखती हूँ की अव्यक्त बापदादा बादलों की दिव्य पहाड़ी पर बैठे हुए हैं और

- अपने दोनों हाथों से वरदानों की बारिश कर रहे हैं...
- इस अमृत की वर्षा में नहाकर सभी बाबा के प्यारे-प्यारे बच्चे अमृत का पान कर रहे हैं...
- बापदादा एक साथ अपने हर एक बच्चे के पास जाकर उनको दिव्य अनुभूतियाँ करा रहे हैं...

➳ _ ➳ मुझे अपने सामने देख बापदादा मुस्कुराते हुए अपने पास बुलाते हैं...

→ और मेरे सिर पर हाथ रख मुझ पर भी अमृत की वर्षा करते हैं...

- मुझ आत्मा का सम्पूर्ण सूक्ष्म शरीर दिव्यता से भरता जा रहा है...
- पवित्रता के श्वेत किरणों से सम्पूर्ण पवित्र होता जा रहा है...
- मेरा सूक्ष्म शरीर तेजस्वी होकर चमक रहा है...
- मेरे सूक्ष्म शरीर से दिव्य किरणें निकलकर चारों ओर फ़ैल रही हैं...

➢➢ अव्यक्त स्थिति का अनुभव

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा अपने सम्पूर्ण फ़रिश्ते स्वरुप का अनुभव कर रही हूँ...

→ अब ना देह का बंधन है..

→ ना देह की दुनिया का...

→ ना संबंधों का बंधन है...

→ ना कोई कर्म का बंधन है..

- मैं फ़रिश्ता स्वयं को हर बंधन से स्वतंत्र अनुभव कर रहा हूँ...
- मैं फ़रिश्ता इस देह और देह की दुनिया के सर्व आकर्षणों से परे अनुभव कर रहा हूँ...

▶ ना ही ये प्रकृति और ना ही विनाशी साधन मुझे अपनी ओर खींच रहे हैं...

▶ ना ही विकारों में मेरी बुद्धि फंस रही है...

■ संकल्पों की शक्ति से मैं फ़रिश्ता जहाँ चाहे वहां जा सकता हूँ...

▶ जहाँ साइन्स के साधन नहीं पहुँच सकते मैं फ़रिश्ता एक सेकंड में वहां पहुँच सकता हूँ...

➢➢ अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर पुरुषार्थ में तीव्रता का अनुभव

➳ _ ➳ अब मैं फ़रिश्ता बापदादा के साथ विश्व सेवा पर निकलता हूँ...

→ मैं फ़रिश्ता बापदादा के साथ विश्व ग्लोब के ऊपर बैठ जाता हूँ...

→ सृष्टि परिवर्तन के कार्य में बापदादा का सहयोगी बन विश्व की आत्माओं का कल्याण कर रहा हूँ...

→ सभी आत्माओं को बाबा का परिचय दे रहा हूँ...

■ मीठा बाबा आ गया है ये सुर उनकी कानों में घोल रहा हूँ...

→ सभी भक्तों के पास जाकर कह रहा हूँ जिसको ढूंढ रहे हो.. कई जन्मों से पुकार रहे हो...

■ जिसके एक दर्शन के लिए भटक रहे हो वो इस धरती पर आ गया है...

■ मैं फ़रिश्ता सबको मीठा बाबा का सन्देश सुना रहा हूँ...

→ बापदादा से सुख, शांति की किरणों को लेकर सभी आत्माओं को सुख और शांति की किरणें दे रहा हूँ...

■ सभी दुखी, अशांत और तडपती आत्माएं शांत हो रही है...

■ सुख का अनुभव कर रही हैं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाप के साथ स्थापना के कार्य में तीव्रगति से सहयोगी बन बाप की दुआओं का पात्र बन रही हूँ...

→ बाप के स्नेह और सहयोग का अनुभव कर रही हूँ...

→ ईश्वरीय सेवा के कार्य में निमित्त बन अपना भाग्य बना रही हूँ...

■ हर कर्म में बाप के साथ का अनुभव कर मैं आत्मा अपने पुरुषार्थ में तीव्रता का अनुभव कर रही हूँ...

▶ हर कदम में सफलता का अनुभव कर रही हूँ...